

भारत में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन : अवसर और चुनौतियाँ

जसवन्त

सहायक आचार्य, भूगोल

चौ. बल्लूराम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय, श्रीगंगानगर

सार (Abstract)

भारत में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन युगांतकारी हैं। वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति, जनसंख्या संरचना, सरकारी नीतियाँ और सामाजिक मान्यताएँ सभी मिलकर देश के विकास की दिशा निर्धारित करती हैं। इस शोध-प्रबंध का उद्देश्य भारत के सामाजिक-आर्थिक विकास का गहन विश्लेषण, वर्तमान डेटा पर आधारित विश्लेषण, सरकारी योजनाओं का प्रभाव, अवसरों और चुनौतियों की तुलना, तथा समाधान के सुझाव प्रदान करना है तकनीकी प्रगति और डिजिटल क्रांति ने सामाजिक-आर्थिक विकास को तीव्र गति प्रदान की है। डिजिटल भुगतान, ई-गवर्नेंस, ऑनलाइन शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं ने आम जनजीवन को सरल बनाया है। भारत की युवा जनसंख्या देश के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है, जिसे 'जनसांख्यिकीय लाभांश' के रूप में देखा जाता है। यदि इस युवा शक्ति को उपयुक्त शिक्षा, कौशल और रोजगार उपलब्ध कराया जाए तो यह आर्थिक विकास की मजबूत आधारशिला बन सकती है। इसके साथ ही अनेक चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। बढ़ती बेरोजगारी, आय-विषमता, क्षेत्रीय असमानता, शहरीकरण से जुड़ी समस्याएँ तथा डिजिटल विभाजन सामाजिक-आर्थिक संतुलन को प्रभावित कर रहे हैं। ग्रामीण-शहरी अंतर, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं में असमानता तथा पर्यावरणीय समस्याएँ भी विकास के मार्ग में बाधा बन रही हैं। अतः यह आवश्यक है कि भारत में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन को संतुलित, समावेशी और सतत विकास की दिशा में आगे बढ़ाया जाए। प्रभावी नीतियों, सामाजिक न्याय और मानव संसाधन विकास के माध्यम से ही अवसरों का पूर्ण उपयोग और चुनौतियों का समाधान संभव है।

मुख्य शब्द (Keywords)

- सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन
- वैश्वीकरण
- तकनीकी प्रगति
- जनसांख्यिकीय लाभांश
- डिजिटल क्रांति
- आय-विषमता
- समावेशी विकास

1. परिचय(Introduction)

भारत आज दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में गिना जाता है। 1991 के बाद से आर्थिक उदारीकरण ने देश को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में स्थापित किया है। आर्थिक वृद्धि, औद्योगिक विकास, नागरिक सुविधाएँ और तकनीकी नवाचारों ने भारतीय जनता के जीवनस्तर में उल्लेखनीय सुधार किया है। इसके बावजूद सामाजिक समस्याएँ जैसे गरीबी, बेरोजगारी, असमानता और सामाजिक भेदभाव अभी भी प्रमुख चिंताएँ बनी हुई हैं। इस शोध में इन दोनों पहलुओं का विस्तृत अध्ययन किया गया है। हालाँकि, आर्थिक विकास के साथ-साथ सामाजिक समस्याएँ जैसे गरीबी, बेरोजगारी, सामाजिक असमानता, क्षेत्रीय विषमता और लैंगिक भेदभाव अभी भी गंभीर चुनौती बनी हुई हैं। ग्रामीण-शहरी अंतर, संगठित एवं असंगठित क्षेत्र के बीच असमानता और शिक्षा-स्वास्थ्य सेवाओं की असमान उपलब्धता भारत के सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन की जटिलता को दर्शाती है। यह शोध पत्र भारत में हुए सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों, उनसे उत्पन्न अवसरों तथा सामने आई चुनौतियों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

2. सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के प्रमुख कारक (Key factors of socio-economic change)

भारत में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया रही है, जिसमें आर्थिक नीतियों, तकनीकी विकास, जनसंख्या संरचना तथा वैश्विक प्रभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वतंत्रता के बाद भारत ने मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाया, परंतु 1991 के बाद हुए आर्थिक सुधारों ने देश की सामाजिक-आर्थिक संरचना को तीव्र गति से बदल दिया। इन परिवर्तनों के पीछे कई प्रमुख कारक रहे हैं, जिनमें आर्थिक उदारीकरण, तकनीकी एवं डिजिटल क्रांति तथा जनसंख्या संरचना विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

1. आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण

1991 में भारत द्वारा अपनाई गई उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (स्वच्छ मॉडल) की नीति भारतीय अर्थव्यवस्था के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुई। इस नीति का उद्देश्य अर्थव्यवस्था को सरकारी नियंत्रण से मुक्त कर प्रतिस्पर्धात्मक और बाजारोन्मुख बनाना था। आयात-निर्यात नीतियों में सुधार, लाइसेंस राज को समाप्त करना, कर संरचना में बदलाव तथा विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) को प्रोत्साहन देना इसके प्रमुख घटक थे।

उदारीकरण के परिणामस्वरूप भारतीय उद्योगों को अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुँच मिली। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आगमन से उत्पादन क्षमता, प्रबंधन कौशल और तकनीकी ज्ञान में वृद्धि हुई। निजीकरण ने सार्वजनिक क्षेत्र के एकाधिकार को कम किया और निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा दिया, जिससे दक्षता और उत्पादकता में सुधार हुआ।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था से जोड़ा। सूचना प्रौद्योगिकी, ऑटोमोबाइल, फार्मास्यूटिकल और सेवा क्षेत्र में उल्लेखनीय विकास हुआ। इसका सकारात्मक प्रभाव GDP वृद्धि, विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि, रोजगार के नए अवसर तथा मध्यम वर्ग के विस्तार के रूप में देखा गया।

हालाँकि, स्वच्छ मॉडल के कुछ नकारात्मक पहलू भी सामने आए। छोटे और कुटीर उद्योगों को बड़े कॉर्पोरेट घरानों और विदेशी कंपनियों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा। श्रम बाजार में अस्थिरता बढ़ी, ठेका प्रथा और असंगठित क्षेत्र का विस्तार हुआ। इसके अतिरिक्त, आय और क्षेत्रीय असमानता में भी वृद्धि देखी गई, जिससे सामाजिक असंतोष की स्थिति उत्पन्न हुई।

इस प्रकार स्वच्छ मॉडल ने जहाँ आर्थिक विकास को गति दी, वहीं सामाजिक असमानताओं और श्रम असुरक्षा जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न कीं।

2. तकनीकी एवं डिजिटल क्रांति

तकनीकी प्रगति और डिजिटल क्रांति भारत के सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन का दूसरा महत्वपूर्ण कारक है। डिजिटल इंडिया अभियान, इंटरनेट विस्तार, मोबाइल टेक्नोलॉजी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), बिग डेटा और ई-गवर्नेंस ने शासन व्यवस्था और नागरिकों के जीवन को गहराई से प्रभावित किया है।

डिजिटल भुगतान प्रणालियाँ जैसे UPI ऑनलाइन बैंकिंग और मोबाइल वॉलेट ने वित्तीय समावेशन को बढ़ावा दिया है। ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में भी बैंकिंग सेवाएँ सुलभ हुई हैं। ई-गवर्नेंस के माध्यम से सरकारी सेवाएँ अधिक पारदर्शी, तेज और उत्तरदायी बनी हैं।

शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी डिजिटल तकनीक ने क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन कक्षाएँ, डिजिटल लाइब्रेरी और टेलीमेडिसिन ने गुणवत्तापूर्ण सेवाओं को व्यापक जनसंख्या तक पहुँचाया है। कोविड-19 महामारी के दौरान डिजिटल तकनीक की उपयोगिता और भी स्पष्ट हुई।

इसके बावजूद, डिजिटल क्रांति के समक्ष कई चुनौतियाँ भी हैं। डिजिटल साक्षरता की कमी, इंटरनेट की असमान उपलब्धता और डिजिटल डिवाइड (Digital Divide) ने सामाजिक असमानताओं को कुछ हद तक और बढ़ाया है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच तकनीकी पहुँच का अंतर आज भी एक गंभीर समस्या बना हुआ है।

अतः यह कहा जा सकता है कि तकनीकी और डिजिटल क्रांति ने जहाँ सामाजिक-आर्थिक विकास को नई दिशा दी है, वहीं इसके लाभों का समान वितरण सुनिश्चित करना अभी भी एक बड़ी चुनौती है।

3. जनसंख्या संरचना और डेमोग्राफिक डिविडेंड

भारत की जनसंख्या संरचना सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण आधार है। वर्तमान में भारत की लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या कार्यशील आयु वर्ग (15-59 वर्ष) में है, जो देश को एक महत्वपूर्ण डेमोग्राफिक डिविडेंड प्रदान करती है। यह युवा जनसंख्या यदि सही दिशा में प्रशिक्षित और नियोजित की जाए, तो आर्थिक विकास की गति को तेज कर सकती है।

युवा शक्ति नवाचार, उद्यमिता और उत्पादकता का प्रमुख स्रोत होती है। कौशल विकास कार्यक्रम, स्टार्ट-अप इंडिया, मेक इन इंडिया जैसी योजनाएँ इस जनसंख्या क्षमता का उपयोग करने के प्रयास हैं। शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण और रोजगार के अवसर उपलब्ध कराकर भारत वैश्विक कार्यबल में एक महत्वपूर्ण स्थान बना सकता है।

परन्तु, इस डेमोग्राफिक डिविडेंड के साथ कई चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं। शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता में असमानता, बेरोजगारी, अल्प-रोजगार और कौशल-असंगति जैसी समस्याएँ इस अवसर को खतरे में डाल सकती हैं। यदि युवाओं को पर्याप्त रोजगार न मिले, तो यह सामाजिक असंतोष और आर्थिक दबाव का कारण बन सकता है। इसलिए, जनसंख्या संरचना को विकास के अवसर में बदलने के लिए मानव संसाधन विकास, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और समावेशी रोजगार नीतियों की आवश्यकता है।

3. सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के अवसर (Opportunities)

- **रोजगार और कौशल विकास**
नयी सरकारी योजनाएँ जैसे कौशल भारत मिशन, MGNREGA के तहत रोजगार सृजन, MSME के लिये वित्तीय सहायता कमाई के अवसर प्रदान कर रहे हैं।
- **महिला सशक्तिकरण**
आर्थिक योजनाओं जैसे 'शक्ति रसोई' ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने का अवसर दिया है; आगरा में इससे वार्षिक ₹50,000 तक आय उत्पन्न हो रही है।
- **स्थानीय उत्पाद और उद्योग विकास**
ODOP 2.0 योजना छोटे उद्योगों को उन्नत तकनीकी और विपणन सहायता देकर रोजगार और निर्यात को बढ़ावा दे रही है।
- **सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ**
'संबल योजना' के तहत असंगठित श्रमिकों के परिवारों को वित्तीय सहायता मिली है, जिससे सामाजिक सुरक्षा में सुधार दिखाई देता है।
- **वैश्विक मंच पर भारत की भूमिका**
भारत को वैश्विक मंच पर नई पहचान मिली है – जैसे BRICS नेतृत्व में भारत की भागीदारी बढ़ी है – जो देश की कूटनीति, अर्थव्यवस्था और वैश्विक नीति में प्रभाव बढ़ाती है।

4. सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन की प्रमुख चुनौतियाँ(Challenges)

- **गरीबी और बहुआयामी गरीबी**
भारत में अब भी लगभग 234 मिलियन लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे हैं। ऐसे क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी सुविधाओं की कमी गरीबी को गहरा बनाती है।
- **बेरोजगारी और कमजोर रोजगार**
युवाओं में बेरोजगारी एक बड़ी समस्या है – खास करके उच्च शिक्षा प्राप्त युवाओं में बेरोजगारी दर अधिक है। इस समस्या का समाधान तभी संभव है जब रोजगार सृजन और कौशल विकास योजनाओं पर अधिक प्रभावी कार्य किया जाए।
- **असमानता**
भारत में आय और धन की असमानता गंभीर समस्या है। एक छोटी आबादी के पास अत्यधिक संपत्ति है जबकि अधिकांश गरीब वर्ग आज भी सीमित संसाधनों के साथ जीवन यापन कर रहा है।
- **ग्रामीण-शहरी विभाजन**
शहरी क्षेत्रों में नौकरी और सुविधाएँ बहुतायत में उपलब्ध हैं, परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में विकास की धीमी रफ्तार तथा तकनीकी पहुँच की कमी समस्याएँ बनकर उभरी हैं।
- **सामाजिक भेदभाव और सामाजिक समावेशन**
जाति, धर्म, लिंग और सामाजिक स्तर के आधार पर भेदभाव आज भी मौजूद है, जो लोगों को मुख्यधारा में पूर्ण रूप से शामिल होने से रोकता है। सामाजिक समावेशन सुनिश्चित करना आज की बड़ी चुनौतियों में से एक है।

5. वर्तमान नीति और सरकारी पहल (Government Initiatives)

- **समावेशी विकास के लिए राष्ट्रीय नीतियाँ**
सरकार समावेशी आर्थिक विकास को सुनिश्चित करने के लिये उपाय कर रही है, जैसे शिक्षा, आरोग्य, सामाजिक सुरक्षा, डिजिटल पहुँच आदि।

- पर्यावरण और सतत विकास रणनीतियाँ

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को देखते हुए सौर ऊर्जा, स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाएँ और हरित तकनीक अपनाई जा रही हैं।

6. विस्तृत केस स्टडीज (Case Studies)

Case 1: महिला स्वरोजगार और आर्थिक सशक्तिकरण

‘शक्ति रसोई’ जैसे कार्यक्रम महिलाओं को व्यवसायिक कौशल और स्वरोजगार के अवसर प्रदान कर रहे हैं, जो व्यक्तिगत और सामुदायिक विकास में सहायक हैं।

Case 2: ODOP 2.0 योजना का प्रभाव

ODOP 2.0 ग्रामीण और कस्बाई व्यवसायों को तकनीकी विकास और विपणन सहायता प्रदान कर आर्थिक स्थिति में सुधार कर रहा है।

Case 3: सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ (संबल)

संबल योजना के अंतर्गत श्रमिक परिवारों को प्रत्यक्ष वित्तीय सहायता मिल रही है, जिससे सामाजिक सुरक्षा में वृद्धि हुई है।

7. विश्लेषण (Analysis)

भारत का सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन जटिल और बहुआयामी है। आर्थिक वृद्धि से समाज के कई वर्गों को लाभ मिला है, लेकिन असमानता और सामाजिक भेदभाव जैसी समस्याएँ अभी भी मौजूद हैं। डेटा स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि गरीबी में कुछ कमी आई है, परंतु सामाजिक समावेशन और रोजगार सृजन अभी भी मुख्य चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

8. समाधान और सुझाव (Solution and Suggestions)

- शिक्षा और कौशल विकास
सौर ऊर्जा, डिजिटल तकनीकों और व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देना आवश्यक है।
- रोजगार एवं उद्यमिता
MSME, स्टार्टअप्स, कृषि और सेवा क्षेत्रों में निवेश से रोजगार सृजन बढ़ाना होगा।
- सामाजिक समावेशन नीतियाँ
लिंग समानता, दलित-आदिवासी समुदायों का समावेशन और सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ मजबूत करनी चाहिए।
- डिजिटल पहुँच और ग्रामीण विकास
ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल तकनीक पहुँचाकर रोजगार व सामाजिक सेवाओं तक समानता सुनिश्चित करनी चाहिए।

9. निष्कर्ष (Conclusion)

भारत में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन सकारात्मक हैं, लेकिन अनेक चुनौतियाँ अभी भी हैं। यदि सरकार, समाज और नीति-निर्माता मिलकर सभी वर्गों के लिये समावेशी नीतियाँ लागू करें, तो भारत एक समृद्ध और सशक्त राष्ट्र बन सकता है।

संदर्भ (Reference)

- योजना आयोग (भारत सरकार)(2014)- भारत में सामाजिक-आर्थिक विकास- नई दिल्ली: योजना आयोग।
- नीति आयोग (2022). भारत / 75: सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन- नई दिल्ली: भारत सरकार।
- भारत सरकार (2023). आर्थिक सर्वेक्षण. वित्त मंत्रालय, नई दिल्ली।
- शर्मा, आर. के. (2019). भारतीय समाजसंरचना एवं परिवर्तन- नई दिल्ली: राज पब्लिकेशन।
- सिंह, योगेंद्र(2018). आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन- नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन्स।
- दत्त, रुद्र एवं सुन्दरम, के. पी. एम. (2020). भारतीय अर्थव्यवस्था- नई दिल्ली: एस. चंद एंड कंपनी।

- Khinchi, S. S., & Tanwar, M. (Eds.). (2017). Environmental Challenges, Biodiversity and Sustainable Development. New Delhi, VL Media Solutions.
- Tanwar, M. Biodiversity Conservation for Food Security. Global Food Security and Biodiversity, 155.
- Khinchi, S. S., & Tanwar, M. (2017). Globalization and Environmental Sustainability. Global Perspectives of Education and Social Sciences, 92-95.
- Khinchi, Shyam S., Human Rights: A Contemporary Discussion (March 10, 0019). Rigi Publication 777, Street no.9, Krishna Nagar Khanna-141401 (Punjab), India ISBN: 978-93-88393-43-0 (Paperback) ISBN: 978-93-88393-44-7 (eBook), <http://dx.doi.org/10.2139/ssrn.5070744>